चित्रलेखा की कथावस्तु

डॉ. सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग
एस.एस. कॉलेज, जहानाबाद।

'चित्रलेखा' भगवतीचरण वर्मा का बहुच उपन्यास है जिसमें पाप एवं पुण्य पर विचार किया गया है। अल्प वय में वैधव्य का दुःख झेलने को अभिशप्त चित्रले एक ब्राह्मणी थी। सतीत्व का पालन करना उसका व्रत ब गया था। तभी कृष्णादित्य नामक एक युवक उसके जी में आया। परिचय मैत्री और फिर प्रेम में बदल गया। इसी बीच चित्रलेखा गर्भवती हो गयी। प्रेम समाज के सामने प्रकट हो दोनों को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। कृष्णादित्य इ अपमान को सह नहीं पाता और इस संसार को अलविदा कह देता है। दुःख के थपेड़ों के बीच चित्रलेखा एक पुत्र को जन् देती है किन्तु वह जन्म के बाद ही मर जाता है। ऐसे में निराश्रित चित्रलेखा को पाटलिपुत्र की एक नर्तक का आश्रय मिलता है जो उसे कालान्तर में अपनी शिक्ष से कुशल नृत्यांगना बना देती है। अतीत के खोल से निक कर चित्रलेखा एक सर्वथा नये रूप में पाटलिपुत्र के समाज में उपस्थित होती है। राजनर्तकी के रूप में उस चयन होता है और पूरा समाज उसके गुणों से प्रभावि हुए बिना नहीं रह पाता। सामन्त बीजगुप्त के प्रेम में वह ऐसा पड़ती है कि लोग उसे बीजगुप्त की बिन ब्याह पत्नी मानने लगते हैं। बीजगुप्त एक युवा सामन्त है जो परम प्रेमी एवं गुणज्ञ भी है।

उधर महर्षि रत्नाम्बर के दो शिष्य अपनी शिक्षा-समाप्ति के दिन गुरु के समक्ष अप

जिज्ञासा रखते हैं - पाप क्या है और पुण्य क्या है? महर्षि समझाते हुए कहते हैं कि इस सृष्टि का ज्ञान उनके आश्रम में संभव नहीं है। इसके लिए तो संसार के प्रपंचों के बीच ही रह कर अनुभव किया जा सकता है कि पाप या पुण्य क्या है। यह निश्चय करके महर्षि दोनों में से एक शिष्य विशालदेव को उस समय के प्रख्यात योगी कुमारगिरि की सेवा में रख देते हैं, तथा दूसरे शिष्य श्वेतांक को सामन्त बीजगुप्त के पास छोड़ आते हैं। ध्यातव्य है कि दोनों परस्पर विपरीत ध्रुवों के निवासी हैं - योगी कुमारगिरि परम वीतरागी और संयमी है। उसने इन्द्रियों को जीत लिया है जबकि सामन्त बीजगुप्त परम भोगी है। उसे पाप पुण्य से कुछ भी लेना-देना नहीं है उसे तो केवल भोग की कामना है।

एक दिन बीजगुप्त और चित्रलेखा मार्ग भूलकर रात्रि में आश्रय पाने के लिए कुमारगिरि की कुटिया में पहुँच जाते हैं। कुमारगिरि एक नारी के साथ होने के कारण उन्हें आश्रय नहीं देना चाहता किन्तु चित्रलेखा के तर्कों के सामने परास्त होकर उन्हें रात्रि विश्राम की अनुमति दे देता है। इस प्रथम परिचय में ही दोनों कुमारगिरि एवं चित्रलेखा एक दूसरे से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। योगी का तेजस्वी स्वरूप एवं सुगठित शरीर चित्रलेखा के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाता है तो योगी के लिए चित्रलेखा की तार्किक बुद्धि एवं उसकी चातुरता - आकर्षण का कारण बनती है। अगली बार दोनों सम्राट चन्द्रगुप्त की विद्वत्सभा में मिलते हैं जहाँ कुमारगिरि मंत्री चाणक्य की चुनौती को स्वीकार कर कहता है कि उसने न केवल ईश्वर को देखा है वरन दिखला भी सकता है। यह कहकर सभा मध्य में आकर अपने योगबल से ईश्वर का दर्शन करा देता सारी सभा योगी की जयकार करती है किन्तु चाणक्य एवं चित्र उसके प्रदर्शन पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं। चित्रलेखा अपने तर्कों से योगी को यह स्वीकारने के लिए विवश कर देती है जो कुछ भी उसने दिखलाया वह ईश्वर नहीं बल्कि सामूहिक